

७४ स्तोत्रं गृह

मृत्युञ्जय जीर्णोत्तर

ASHA ARCHIVES

2981



ॐ

जय नमो

विष्णु



गणेश



अथ कृष्णः (यत्तु तमीमांसा ३०८) ॥ अंखवकु कृत्तंदहः ॥ ६६ ॥  
॥ ७७ ॥ (अथ चिन्तित्ति फीगं लिफितागं हनिचमनं) ॥ चनः  
(अथ कलिफितागं ह ॥ ७८ ॥ अग्निहापुगवातमं वद  
यासपनायं ॥ ७९ ॥ कालं वनं ससं ॥ ८० ॥ उत्तमिः  
अथ मीषः हदिकृष्णं वतस्य ॥ ८१ ॥ विमं गययनिहं

॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ सावना उमनं ह्ययः गीतांगउत्तमा कृत्तं ॥ पं  
चनामसहसं वं ॥ ८४ ॥ १०॥ यत्तु हानं वधममतिं हलमी  
कावनं नथ ॥ ८५ ॥ कायासमाहयः ॥ ८६ ॥ ११ ॥ वडाकं  
मुव (अथ चिन्तित्ति फीगं लिफितागं हनिचमनं) ॥ चनः  
॥ ८७ ॥ १२ ॥ ॥ ८८ ॥ उत्तमा ॥ ८९ ॥ १३ ॥ वधममतिं हलमी  
कावनं नथ ॥ ९० ॥ कायासमाहयः ॥ ९१ ॥ १४ ॥ वडाकं



सुविस्तृतं ॥ अथ वृत्तानां च नीतः श्री धुंभा कथय पुत्रा ॥  
१॥ अथ वृत्तानां उदाहरणं ॥ योपि सं ४ (अथ नादः विद्यानां रूपा  
पक्रमस्य ॥ अथ चाला धा निः ॥ अनियं नवकालयं  
उ ॥ १४ ॥ (अथ धुं व विपु धा निः ॥ अथ ह्या वाल धा न की ॥ प ॥  
नो धा न की वः ॥ अनियं ॥ १५ ॥ अथ च कुं द की वः ॥ अणी निः

नां  
(अथ धुं द की ॥ विद्या (अथ क सु ग म ध रीः ॥ अनियं ॥ १६ ॥ क  
था वि की हयं वि कीः (अथ वि की न स वि की य ॥ मानूषां मा  
नूषा वि कीः ॥ अनियं ॥ १७ ॥ प न ड व प न सुः विद्या नाः  
न प न क म री ॥ निताला चाला धा निः ॥ अनियं ॥ १८ ॥  
माता पिता पत्नी आ गीः ॥ अथ ह्या स हा द नी ही न



काविपविश्याईः मा निर्यां ॥ १ ॥ अ मा चंद व सां प्राप्तिः  
अ मा चंद सव्वती धर्क ॥ २ ॥ अ मा चंद वाक्कनीं गभव मा निर्या ॥ ३ ॥  
॥ निर्यां निर्यां वृत्तानां ॥ विवादि कृत्तुं रूथ ॥ तदान न  
प्रकृष्टिः ॥ अ निर्यां ॥ ४ ॥ अ चंद रूत्तुं रूत्तुः यत्तु कृत्तुः  
वा सन ॥ पर्वति मेथनं कृत्तुः दानीया ॥ ५ ॥ वाक्कनीं कृत्तुः

वेथः ॥ ६ ॥ अ चंद रूत्तुं रूत्तुः अ मनी मंगुवादी ॥ अ नीय  
॥ ७ ॥ पाणुपणुति वा दिवौ ॥ ८ ॥ वाक्कनीं विहाय न  
॥ ९ ॥ अ चंद रूत्तुं रूत्तुः अ नीय ॥ १० ॥ अ म दूत उवा  
॥ ११ ॥ वन दूत त्वया स्माकः धर्म वा अ वद दूत ॥ गृह वा सृष्टि  
का न वः कृत्तु स्माक व वा अ म ॥ १२ ॥ वेथ न उवाच ॥ मूफा



कं भीवयानात्री विदि रु कलह पिय ॥ मस्तक मीवर्त रु  
काः विभुमं तापदुका ॥ २६ ॥ नीकै (८) म (८) हा (८) गटह  
वाच म्म काल ॥ ए गमल य ए गृह्य विभुमं ॥ २७ ॥ ए ग  
नं ए गृह्य (८) चः व मुं व म लि ना नि कं ॥ म नितं मा ऊर्नः  
यैकः विभुमं ॥ २८ ॥ य ए ल व स मू चि ई स्तान मा ऊर्न

लक कृती ॥ गम मस्तक कडा द वाकः विभुमं ॥ २९ ॥ म म व  
म गृह्य विभुमं ॥ ३० ॥ च वः च त्वा वि वृ ८ न प (०) ॥ म हि धा वृ  
क ए वः विभुमं ॥ ३१ ॥ ऊर्न नै त कि डू ज न क प पृ न  
चि डूः प द पं क न ह य थ ॥ भे व वि ग र तं य मी विभुमं  
॥ ३२ ॥ प व ड व प व मी नीः डू ८ वि र मू र त त्य मी गु वृ प



व्याहिरि गम्य श्रीः विष्णुम ३२॥ अस्यावा कर्मकृतं यनः दुःख  
सुखिरे सर्वदा ॥ विदिय च तदा लोकाः कीदो कृत्वा मलितत्वं  
॥ ३३ ॥ वंदे साय मासा पुनः अत्यन्तं सुखिना मनः ॥ सध्या का  
लस्मिन् विधीष्वर्म्मा वा कर्मसु कर्म ॥ ३४ ॥ अष्टांगान्तरं  
पूजाः निधनो धनतरुः ॥ व्यापिहि म्म शतम्भुः अवि

द्या विधीष्विदम् ॥ ३५ ॥ पठितं मुख्यं यनः समगीता  
नार्थच ॥ नरस्यै यमपि जं वय ४ प (०) त्पू नृषी एव  
॥ ३६ ॥ अकिनी साकी नी चैवः एयं नास्ति कदाचनः म  
द्यं सर्वपापयोः विष्णुना कर्मसु कृति ३७ ॥ इति यम  
शास्त्रं श्रीगुणाद्या ॥ ३८ ॥ सवनेषु दृग्भविष्यः ह्यनुनसि



टपषक॥ यचै म्पारो मवाच च॥ ऋषिर्देवता मृति  
यदिभुङ्क्षु मभुङ्क्षु वाः स्वधनिर्यं विवधनि॥  
(श्रीजगदम्बादेवेनम॥ ॥ ठूँडुडवाच॥ ॥ ठूँडीसाक्रीना  
मसादवी. देवता समुदाहता॥ (गोत्रीसाकंशनीदवी. दुर्गा  
नासीति विश्रुता॥ काश्यानीमहासाया. चसद्यतामहा

गया॥ सावित्री सावर्ग्याष्टौ बुद्धानी बुद्धवादिनी॥ नायाय  
नीरुद्रकालि. तूष्णीक मूयिर्जना॥ अग्निजाता नीडमुखी  
कालुषाणि न पालिनी॥ मद्यस्वनासदम्बाक्री. विकतामीज  
तादनि॥ महादत्री मुक्क. भी. धाननूपा महाबला॥ अचूना  
रुद्रकानका. नागहर्त्री शिवप्रिया॥ शिवदू. तीकला लिच. प्र



शुद्ध पत्रमंजरी ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॐ उ च पाव. ॐ न्यस्यते. यथा य  
नी ॥ महिषासुरहन्त्री च. वामं भुजं गरुडदेवता ॥ नन्द्याच न कप  
काव. च कुयूक्षसूयवता ॥ वामनी चैव दुर्गा च. तु कवी वा  
प्रसक्तिया ॥ वा ना हो नान सिंहो च. ली मरे नवनादिनी ॥ भुज  
ते स्मृति धृतिर्मम विद्यात श्री सनखाती ॥ नूनना विज

यापुष्प. मानसा कायनाडिना ॥ रुदानी पावनी दुर्गा  
हेमवयदिका भिवा ॥ उमा रुगवती नूद्रा. रुदानी विजया  
ऊषा ॥ क्रम कर्त्री नि मार्ग दुर्गा. कृष्णती वैष्णविता ॥ ताना  
पद्मावती लीला. यद्वनारो मना नमनी ॥ नूनना मद्यद्विदी  
सुता भुजं वधी मता ॥ शयना भोग्य भोग्य. जान निया



नापन॥ भगमावले यद्यस्तु मूय गवा प्रिव भनान॥ आ  
 वलथ लसु मुनु॥ तरु वी छि नरु ही॥ प्रिकाले यं ४५८०  
 निर्य॥ धनवान् पुत्रवान् रवन्॥ सर्वस्वत्र ऊध निर्य॥ सर्वका  
 यो विविधय॥ सर्वं धनी प्रसादेन सर्वं भागनिवानेन॥ ६  
 सर्वं नर्गलमी गली॥ अथैवार्थसाधक॥ भनस्थायं व

क. (गोत्री. नात्रायनीनमोऽस्तु ॥

॥ॐ नमो भगवते ॥

ना (१०००) का क्षमता समाप्त ॥ ३३॥

श्रुगण्यपुत्रसंघे, वनं वाचनमवच॥ सर्वं दुःखं मृतिश्च  
वर्षं च नवकं वाचनक॥ मृत्तिकायां मित्रैः युग्यं नैः मृत्तिका  
निकृतिर्न॥ विशुद्धमिह यन्नादिः लिखितं च गृहीतं







[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नवगुहानामं सर्वेषां सूर्यादिनां पृथक् पृथक् ॥  
पीठान् ५४ सहा वा ऊन गायन् सकृत् नृणां ॥ १ ॥ पीठानोः  
भयत्रा ऊन नामानि ५४ एव स्युः ॥ सूर्यादीनां च सर्वेषां पीठ  
नमस्तु ५४ एव स्युः ॥ २ ॥ आदिशुभविना सूर्य ४ पूषा ४ अर्क ४ शीघ्र ४  
वविष्णो ४ अश्विन ४ चतुर्मासं सोमं लिख्यमानि विदुः ॥ ३ ॥



वि

ना (ध्यादिन कनः सफ सफी ४ पु लं कनः ॥ विरा व सुर्व द क म्मः वः  
दा (उम वेद वाहन ॥ ५ ॥ ह नि प ३ व ३ का ल व कु ३ क म्म सा की उ गायः  
मि ॥ ६ प मि मी वा ध का ला नू ल स क न रु नू ना क न ॥ ७ ॥ दा द ३ उ म  
त्मा वि ३ व क म्मा ति हि ती ग स भा नू द ४ ॥ उ ग न्ना (ध्या न वि दा कः  
३ का ता त्मा क म्म पा त्म ३ ॥ ८ ॥ स म्मा ३ या ग र प मि ३ स र्व ना क न म

रुत ॥ ९ ॥ उ वा कू स्व म सै का ॥ १० ॥ ल पा न दि मि न न न ॥ ११ ॥ ध्या  
नै र सि ह स र्व त्मा ता क न गु वि क रु नि ॥ १२ ॥ मा रु (मु मि दि न ३ ३  
न रु प ना वा क ना प न ॥ १३ ॥ उ ग ल क रु उ ग त्मा की ग नै ३ व न पि ना  
उ म ॥ १४ ॥ स रु मु न मि रु न मि रु ग वा न रु क व त्म न ॥ १५ ॥ वि व ३ व  
ना दि द व ३ य व य वा पि वा क न ॥ १६ ॥ ध त्म न नि वा धि रु रु ति य उ रु



य विनासन ॥ १०॥ व ना वना त्वा मण्डपि ता विष्णु विं कर्त्तु ॥ ११॥  
का स्व काय ह लचि कर्त्तु के न त्वा त्वा ॥ १२॥ ना ना च नो म हा द  
व ॥ १३॥ पू नृ ष ०० ॥ १४॥ त्रि वा त्वा य न मा त्वा च त्वा त्वा त्वा स वी ता ॥  
मू ष ॥ १५॥ ०० ॥ न ना य म ह व ने र्म ता व नृ (त्वा निल ॥ १६॥ गी य ॥  
०० ॥ न ०० ॥ १७॥ ही म ०० ॥ १८॥ गु रू क वि ॥ १९॥ ०० ॥ विं धु नृ ॥

०० ॥ २०॥ का ता त्वा का वि ॥ २१॥ सर्व दू व म या द व ०० ॥ २२॥ काम पु  
दा य क ॥ २३॥ ०० ॥ य नृ नृ म ति म्मि ता ०० ॥ २४॥ सो ति दि वा क र्त्तु ॥ सर्व  
पा प वि नि वि नि म्मि क ०० ॥ २५॥ सर्व श ग वि व र्जित ॥ २६॥ ०० ॥ वृ ण वी च्चि न वा ॥  
०० ॥ मा नृ ०० ॥ २७॥ आ य त्वा न सं ग य ॥ २८॥ व वि वा न प (थ य त्वा ना मा न ता नि  
०० ॥ २९॥ ०० ॥ ३०॥ पी ज म्म नि वि र्म म्म गु रू नां ०० ॥ ३१॥ वि र्म य त ॥ ३२॥



[illegible][illegible]



॥ ग॥ गुहापिनां वसुधैर्वीर्यं कुरुते ॥ वसुधैर्वीर्यं कुरुते ॥ वसुधैर्वीर्यं कुरुते ॥  
वसुधैर्वीर्यं कुरुते ॥ वसुधैर्वीर्यं कुरुते ॥ वसुधैर्वीर्यं कुरुते ॥  
॥ जंभवत् ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥  
गच्छति ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥ गच्छति ॥  
कुरुते ॥ कुरुते ॥ कुरुते ॥ कुरुते ॥ कुरुते ॥

[illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
 अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विबुधकार्यहर्ता वि. सोम्या बुद्धि विरहिना ॥ १॥ कन्दाम्बिका विः  
पूतृ पि. हानिहो हानिनायक ॥ २॥ गदपिनाहना दान. पशुधः  
ये परमपद ॥ ३॥ आपि केय ४ सोम्यमर्कि. गुणदा गुनि  
वसल ॥ ४॥ यं च विसदिनामानि, बुधस्येनानिय ४ प. ठकु ॥ ५॥  
समस्तवृष्टिगारुत्य. पिदाहनैर्विनुः ४ ॥ ६॥ इति च कायः



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 विष्णुसिंहसहस्रनाम ॥ १३५ ॥ ॥ कुं न मोक्षयन्तु ॥ ॥ गुः  
 दृष्टिस्तुतिर्निवः सुनाचाय विदामन ॥ वागीर्षिषर्षेदि  
 ये. गमय ॥ पीताम्ब ॥ सुधी ॥ १ ॥ सु धाद्वि गताधी. ग्रह ॥ गम २  
 पीताम्ब ॥ दयाकर ॥ सोम्यम् ॥ १ ॥ सुधी ॥ सुधी ॥ सुधी ॥ सुधी ॥

कि ॥ २ ॥ लोकपुत्र ॥ लोकगुह ॥ नीतिरूप ॥ नीतिकानक ॥ ताना  
 प्रतिष्ठा ॥ गीत ॥ वेदवद ॥ पितामह ॥ ३ ॥ एकवृहस्पति  
 मत्वा नमो न्यता निय ॥ ४ ॥ ॥ अलागीवतवान् श्रीमान्  
 पुण्यका ॥ वेत्ति ॥ ५ ॥ जीवद्वर्ष ॥ गरीम ॥ पोषं वा ॥ ग्ये  
 विनोद ॥ ६ ॥ य ॥ पूजय ॥ दिन ॥ पीतगंध ॥ कुरु ॥ मने ॥ ७ ॥



पुष्पदिपापहोत्रेऽथ. पञ्चयित्वा वृहस्पतीं गु. वाक्मन्त्रं गङ्गा-  
मृ. यित्वा च. पीदासा निरुवज्जु नो ॥ ४॥ ॥ वृत्तिग्रीह्यदेव  
नाम वृहस्पतिस्तु पुंसमाप्य ॥ ६॥ ॥ तुंनमाग्नीष्टकलाय  
॥ १॥ ॥ ४॥ काव ४॥ कुं न ता. गु. कावे न धन ४॥ गु. धिं ४॥ हिमारे  
वृं नु धवल ४॥ गु. गुं ४॥ गु. कृ. ह्यल ४॥ १॥ नीति स्मृनीति. कृ.

नीति. मार्गगमी. शलापिय ४॥ उसना वदवर्पांग. पानगः  
४॥ कविना लवि ४॥ २॥ एगव ४॥ कृ. लसिंधु. स्मृनसंयत्त  
४॥ ३॥ गु. कृ. ग्यमानिनामानि. गु. कृ. स्मृत्वा गु. य ४॥ प. ॥  
३॥ अयं दनं. स्वर्प. पृ. न. श्री वमतिमूर्तिमी ४॥ विद्यां चैवः  
मिर्जं न ह्य. गु. कृ. गु. द. द. द. द. द. द. ४॥ ४॥ वृत्तिग्रीह्यदेवः







॥ ५ ॥ अकुरुते न गगदिष्टा. यो न जानयदादिकं ॥ यय वृषन  
ना नाजा. मिष्ट पृष्ठाने दिजान ॥ ६ ॥ समाधान किमप्राप्ति  
बुद्धमाधिरुसर्तुमा ॥ ७ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ ॥ प्रजानाम्यु  
तिने कथं नस्मिन्निर्नैकनपुजा ॥ ८ ॥ अयथा गसमा कानो  
वद्भासकादि हिस्तु ॥ ९ ॥ प्राहितस्य वचस्तु. नाजा विजा

यसमागमा ॥ ८ ॥ तदासंविद्यामनसा साहसं पत्रम त्साहस  
४ ॥ समादाय धनुर्दिवं दिव्यायुद्धं समन्वीत ॥ ९ ॥ तथमाः  
त्रैलोक्ये गगनं गतान् द्रुममुल्लङ्घ्य ॥ स पादजातानानि नुः  
नरुस्त्रयपि निहिनं ॥ १० ॥ त्रैलोक्यं काञ्चीनदिव्यं मेः  
निवर्त्तयितुं विदुषि न ॥ ११ ॥ तव नुहयेयुः कर्महं कुरु मन्त्र



॥ ११ ॥  
विष्णुः ॥ दिव्यमानमहान्न. किमिति म्कृत्वा कालः ॥ वश  
प्रसन्नता कास्य. द्विमिय ०० वलास्तन ॥ १२ ॥ कर्त्तुं मानः  
मानि स्मिता. प्राविशत्किन्नाहिनां ॥ १३ ॥ कर्त्तुं कर्त्तुं  
कायमु. संज्ञाना युं निजाजितं ॥ १४ ॥ दक्षदसैवथव  
॥ १५ ॥ संज्ञाना सुन्द पदका. सः

नामुन निरुदनं ॥ १६ ॥ हसित्वान्दुयाको. नी. विदः  
म्वचनमव विर ॥ १७ ॥ गनिवृठवाच ॥ पोवृषनवनाऊ  
द. वरनिप एयकैर्नी ॥ १८ ॥ दवासनपदमाग्व. सिद्धिः  
विज्ञाधनसुध ॥ १९ ॥ मयावला कितारुर्वः. एस्मा श्रीसुवर्ग  
निर ॥ २० ॥ वरैवृहि वदास्यामि. मूसायदिरिपिरं ॥



पदमवधुतार ॥ ग्राहिनीं भूदयित्वा तु. गजगवीचयासं ॥ १० ॥  
 सन्निभसामलायावद्यावत्तदार्कमदिनी ॥ ११ ॥ आवर्तिमया सो न-  
 नात्यमिष्कामितं वर्नं ॥ १२ ॥ चर्वममु सन्नित्याना. वर्नं दत्त्वा तु  
 गम ग्वर्त ॥ १३ ॥ संप्राप्य तद्वर्नं नाना. कृतं च यो एवमदा ॥ १४ ॥  
 वादगमदं तु पूरि क्री. नगदापि एविष्य निष्ठा नुवम्य ननु स-

[illegible]











१ श्री गणेशाय नमः ॥



आशा आरुक्मि

ASHA ARCHIVES

2981



[illegible][illegible]



यथा मित्तर्नरस्य पित्रा चान्यथा सास्य व ॥ अनेनेव प्रकाशनाः  
 पित्रा कृत्वा गदवत् ॥ विनययन्तु सन्त्याय नाजाद सत्रथ कथ  
 मन्त्यकृत्वा र्थमात्मानं नमस्कृत्य मने ॥ गनिनां वा तन्मूला न  
 ४ त्वत्कृत्वा नममर्त्तदा ॥ य ४ ० ५ न ॥ गति कृत्वा नममर्त्तदा  
 दत्ता ० ॥ पञ्चयित्वा गनि ॥ गति कृत्वा नममर्त्तदा ॥ गति कृत्वा नममर्त्तदा ॥

[illegible]



निश्चयि नाथम् ॥ १॥ जावदि ॥ दि ८ का ननु प ८ श्री क ८ रु द या  
 ग्रय ८ ॥ विधु नु ८ ८ स ८ हिक का ८ था ननु धा म हा व ल ॥ ३॥ ग्र ह ८  
 पि ना म ना दं मु ८ न क म शा म हा व ८ ॥ प ८ र्वा व म रि ना मा नि ८ स  
 वा ८ रू स दान न ॥ ४॥ य ८ प ८ ० न ह नी पी ८ न ८ स न स रि क व ८  
 ल ८ ॥ अ ८ न ग्य प ८ म ८ तु ली ८ शि रं धा न्य म ८ र्गि र्गि न ८ ॥ ५॥ रु द या

मिना कुरु मे यः प० भस्मा शम्भु के मं॥ ह्रीं नमो ० ॥  
जी व धर्षणनेनत्र ॥२॥ ॐ निगुल पुना दी नाद  
परमार्थ ॥ ॐ ॥ कुं मन भा करे ॥ ॥ कपुठ कात ठ कनिता  
धूमकपु विव मुक्त ला ककपु म्हा कउ १ स र्व कपु र्य  
प्रय ॥ १ ॥ नो डा वृड सि या वृड ४ कुन कम्म गुग्गुध धूकु



॥ पलाल कुमसंग. मिष्टवसुधना ॥ नरुत. विविष्टकुमवः  
 लि प्रीति. विविष्टकुमवाहन ॥ विविष्टकुमसुधना. मिष्टवः  
 य सुपवीनपुत्र ॥ ३॥ ना नामनविमर्दीन. जे मिश्रथाविगः  
 विमर्श ॥ पंचविसेतिनामानि. कर्तार्य ॥ सुमरीय ॥ ०॥ ५॥ न  
 स्यनश्च निवाधव. सुधी कुरुपुसापन ॥ धनधन्यप ॥ ६॥

नाम च एवमुच्यते सर्वस्य ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ तुं न मा गी ग ल सा य ॥ ॥ श्री गि ना य ॥ अ प ध्या नी ॥ अ द्वा र्ध ॥  
मा व ना तं वृ ष ह नि ग म नं, आ प्य मा ता पि श्व रं, अ र्थ नं क र



श्री गणेशाय नमः । गति युक्तं चिन्तये ॥ पूजा आद्यादि स-  
 त्तु ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]







नृवा ॥ गन्धर्वीपानसंघेव . तिष्ठिविधाधनासुधा ॥ १२॥ सा  
ध्या श्ववसवीत्रुडा . सुधाग्निनीमृतामृतो ॥ मातृताश्वदिश्व  
नाश्व ॥ ४ स्तुव वाजंगमासुधा ॥ १३॥ त्रिमासुपिवधनानु . म  
र्थ ॥ अयनिपनासुर्हि . पूजयन्निनवादय ॥ १४॥ नयमेश्व  
वसंयनि . मर्थ ॥ चमोर्कनामिवदानी . दवानीवसदासिव ॥

१५॥ आधानमकि ४३ कीनी . मर्थ ॥ एतावत्रजंगमवापि यावः  
र्हिष्ठनिदहिनी ॥ १६॥ जीवतिशोसनाकार्य . मर्थ ॥ सामसुध  
याग्निमधसु . यामवापिसदासिव ॥ १७॥ कनपुर्यमहाकन  
मर्थ ॥ प्रवृद्धवाप्रवृद्धिच . त्वजगत्सुअसिपुला ॥ १८॥ श्वदि  
वृषेनदवशी . मर्थ ॥ अगजीरुमन्याना . मर्थ ॥ अगताप्रः



पु ॥ १६ ॥ कावर्गसर्वतीर्थनी. मृ ॥ ॥ ननत्वमिन्द्रियानां  
सर्वज्ञानप्रकाशके ॥ १० ॥ सास्ययोगश्चैव सञ्च. मृ ॥ ॥ नृ  
पतीतमनूपचै. पिशुस्ययमवच ॥ चतुर्थांगिकनाधन. मृ  
॥ ११ ॥ नवकवक्रिन्धासिः सामनूपासिपूतक ॥ कृष्णकः  
॥ मेवतूपासि. मृ ॥ १२ ॥ कुर्यकनासिपापानी. पू ॥ ॥ नानां ज्ञानि

वर्धन ॥ त्वं हि ८ (ग्रयसा निर्यं. मृ ॥ १३ ॥ त्वं प्रकाशः  
सुमाधान. त्वं वीर्यगुवनपय ॥ सर्ववत्सलमवापु. मृ ॥  
॥ १४ ॥ त्वं सामर्त्यदिनगञ्च. त्वं मात्माप्रकृतिपना ॥ अष्ट  
विभक्तलानाथ मृ ॥ १५ ॥ सर्वद्वियगुप्तमधन. सर्वरुः  
तमरुमग्रय ॥ सर्वज्ञानपदानीदा. मृ ॥ १६ ॥ त्वं मात्मा स



वैष्णवः. त्विगुणनामधीश्वरः॥ सर्वानन्दमया धनः. मृग्यः  
॥ १७॥ त्विगुणः सर्वयस्यनी त्विद्विद्विप्रिनकः॥ मृग्यः सर्वयस्यनी  
यागः. मृग्यः॥ १८॥ सर्वमायाकला धनः. सर्वान्द्रियपमायवः॥ स  
वृद्धियगुणधीमः. मृग्यः॥ १९॥ नृपगन्धरुथपमः. मृग्यः  
लानयवः॥ वरुणप्रकाशमनखा. मृग्यः॥ २०॥ वरुणवि

धानीमदिनी. त्विगुणः सर्वयस्यनी॥ लालयवविचिन्ः  
मृग्यः॥ २१॥ त्वमनादीनमनश्च. निष्ठा निष्ठा विलवनी॥ मृग्यः  
त्वमवदवगः. मृग्यः॥ २२॥ त्वमका निष्ठा देवः सकलाः  
गुवनैः पृथ्वी॥ अमिहः सातिनृपत्वं. मृग्यः॥ २३॥ अनन्तकाः  
निर्सेपनः. अनन्तकासनसहिता॥ अनन्तमिहः सगः. मृग्यः



॥३४॥ याकायकस्वरूपन. शाफविश्वमननकर्म ॥ विस्वात्मा  
 विश्वरूपत्वं. मृश्य ॥३५॥ त्वहीनः ॥ पत्रमाविश्या. त्वहीनप  
 त्रमागति. त्वहीनकार्त्तिकर्मा. मृश्य ॥३६॥ कुम्भादिनामिः  
 कार्त्तिकर्त्तृ. कर्त्ता कस्य सर्वतः ॥ युक्तिमृत्किपर्वदाता. मः  
 र्य ॥३७॥ प्रकृतनादिपूतृषः. ह्यमीशपत्रमः शिव ॥ अदाः

अनप्रज्ञानरि. मृश्य ॥३८॥ सर्वसंकीर्णययत्तु. स्वचिप्रच  
 त्तमानसः ॥ एकः ॥ (मात्रियावृत्तन. नमृश्यसतः) ॥  
 एवम् ॥३९॥ नपमृश्यएयनस्य. चक्रांतचलघयम् ॥ बाधः  
 याभापपद्यन्. नापसम्बलर्यएवम् ॥४०॥ अथासंनक्त  
 काले. गतेकावरुनका ॥ मृश्यनजोयनस्य. नागमसंके  
 का १



विमूर्ति ॥ ४९ ॥ पंचम्याचतुदस्यीका. पूर्वनास्यीमंथापिकाः  
॥ गतमवर्तयन्त्यसु. गतवर्षसंज्ञिवति ॥ ४९ ॥ वृत्तं ह स्याः  
एतत्तदवस्थसि स्यामीनः ॥ ४९ ॥ स्वप्ननाशनं पूर्व. सर्व  
विनाशनं ॥ ४९ ॥ स्वप्नप्रवर्धनं निर्वृत्तं. सर्वत्र स्मृतनास  
नं ॥ सर्वपापविनिर्मुक्त. शिवताकमहियते ॥ ४९ ॥ गतवर्ष

सजीवन्तु. वृत्तपोषपतिस्तिर्न ॥ ४९ ॥ मोरुसविद्याम्भ. पृ  
रुमं ४ पूर्ववत् ॥ ४९ ॥ ४५ ॥ मृत्पृष्ठेयप्रकफन. चिः  
मकालं सजीवति ॥ ४९ ॥ तफरुनाकृतात्पाया. स्मृतना  
एतत्तदवस्थ ॥ ४९ ॥ वृत्तिश्रीपावमग्नतनुतनुनामीति साह  
मुक्तमीमर्थे श्रीयस्तार्थसमाप्त ॥ ॥ ज्ञायायाप्रथिसवाव्य







क. नादिनी ॥ हिममृक् निर्दिष्ट. कपात गसि स्य वरी ॥ प्रितावनी मही  
मही प्रि गुर्व. अथ स्युक मीदनी ॥ नागमर्क काल सद्योगि. द की (का  
नवन पुदा ॥ सि लि लि लि नी चि नाहानी. सर्वथा पितृ न ग्य नि ॥ (मः  
मय प्य न सा दवी. (म्य ता जी (म्य रु वा मि नी ॥ (म्य रु म सु प नि धनी. मू  
का र न न द पि ता ॥ वा न न त्यां म पा के शु. गा न वि का च वा सि नी ॥ अः

(म्य रु म सु प नि धनी ॥ ०. माह ग्य नि न माह रु ॥

वा न न त्यां म पा के शु. गा न वि का च वा सि नी ॥ न क व लु प नि धनी. सि  
द ना व न वि गु हा ॥ च पु पु गा स कि मू ला. सि धि पा पु ध न स्या ॥ न क  
व न्मु ध नि ध न. स वी नि न म मि ता ॥ क मा नि प न मा म कि ॥ म य न य न वा  
ही नि ॥ न क व लु प नि धनी. न क मां सा व सा सि नी ॥ का ना पु नि म हा के



यु. वदतु आववाहिनी ॥ गाम्ययावै हि नानिथी. कोमा निचनमा लुके ॥  
॥ विष्णु विष्णु माया च. देशद प्यदिनासिः  
नि ॥ हनिमस्यामवभुजि. गच्छाप निहै हि ॥ गंरु चक्रमाहसु. उ-  
उर्वक विष्णु विष्णु ॥ नक ज्ञानाम साकिदा. नाना एव नदवि ॥ ह नित्य वा-  
रिगध ॥ सपाह निमध लिनी ॥ स्वेमेय आभराले. हिति नु पनरै

हि ॥ अरुहा स्यामहाकेयु. कदमवृद्ध वाहिनी ॥ तिष्ठति पी ॥ ने नृप  
नमाच निनम लुके ॥ ॥ वाताहि धातुन के जी ॥ नक के जी मह  
दनी ॥ उदुधनात मलीनाः वा के के उ लावनी ॥ कथानमा  
लाए नलाः वि विगुः पूष्य ॥ अरि ना ॥ महामहिष मातृध  
हातिना शि समपुर ॥ मीनी कु भव हि को याः सा अरु



ननुपिता॥ प्रिनपुठ तिनादहाः ३४४ विनाशिनी॥ ययै-  
गीकृपुसंस्वनीः निम्वरु कसमाशिता॥ नागपी० स्मिताः  
निथीः कीनत्रयीनमास्तु॥ अकुंभवीसहमाश्रीः कृकमातृ  
नविगुहा॥ सुनेभ्यवीसदादः सवर्तमानवदधिनी॥ चतुर्दुः  
शाविभताश्रीः कृपयस्त्र विधा निनी॥ महावदुधवीदवि

स्मिताहतावतागगा॥ नानापुष्पवतादवीः नानावत्विद्वि  
ता॥ नानागन्धविनिपातीः नानावमुविताजिता॥ चतिपुच  
महाकृपुः कर्नकवृकवाशिनी॥ वामपी० स्मिनिर्ग्यः अकुंभ  
वीनमास्तु॥ ॥ चाम्बुचक्रिकाचक्रिः चक्रचक्रसंशुध  
शिनीः चक्रुहसासचक्रुश्रीः प्रचक्रुचक्रुनाशिनीः दंष्ट्राकना



लवकमीः कपीतमीकः ॥ अदनी ॥ कमीली वली नोडीः ॥  
त्रिद्वान्तनली वमीः मरुपुत्र समावृष्टः ॥ उजा ॥ अष्टासु ॥  
एनाः ॥ अस्मिन् वेर्मधृताहस्ताः ॥ उमेवरे धर्म ॥ अस्मिनी ॥ क  
र्तिकयातहस्मिनीः वदार्थयुषिता ॥ नवचस्मिन् वृतादवी  
दीपीव कटिस्मिता ॥ मृदुमाता धृता नोडीः ॥ अमु एव न ह

विता ॥ हादाकाते सर्वमीः ॥ अतिरुतु सदापि अ ॥ समुहं सु  
र्धर्तः ॥ कामः ॥ यामकूपे पुत्रि पुत्रि ॥ आता माता कृता देवीः ॥  
उदिकाटि समपरा ॥ रातवमात अर्किः ॥ यनिवात्र ॥  
वाकसी ॥ चक्रसुक्तमहा ॥ अमुत वा मिनी ॥ पी ० उत  
वसुक्तानि ॥ चामुयै नमा ॥ ॥ महावस्मी महादेवीः ॥



गमधुनसुखी॥यद्वयपादकावृक्षःसिंहसनस्त्रिभासुधी  
॥चतुष्टयाविभक्ताकीःसर्ववक्रगदाधनी॥नृपनाहानक  
पूनाःवतकुरुतक्षत्रिणी॥वतस्ववित्तसर्वशोःचूडामनि  
विरुषिणी॥विचिर्गुण्यनर्तवःवसुगन्धानुनपिनी॥गु  
लाक्ष्यापिनीदवीःसर्वस्वसचमाचर्य॥सिद्धिधनमिता

विद्याधनसूत्रावृत्ति॥दविकारमहाशुभःसंज्ञावाचक  
लागम॥ॐश्रीगवर्नयो०संस्तुतिःमहावेशीनमोस्तुत॥॥  
अस्तुशुभितादवीःअस्तुवृक्षानुवासिनी॥अस्तुवृक्ष  
सयुक्ताःअस्तुमागुनमोस्तुत॥जननीसर्ववृत्तानाःसर्वस  
त्वापकृति॥सर्वधापकृतादविःसंज्ञावपासुदिनी॥नम



वसवः भस्मादि. त्वमवयागत्रुपिनी ॥ त्वमवसृष्टिर्मे हारी त्व  
भवसि गिरुपिनी ॥ त्वमवसर्वनुपाति त्वमव विष्णुपिनी ॥  
पी० धनमदायव. यवयवमहात्मना ॥ रुक्मंतीष्वर्षाद  
ध्यात्रं गंतीत्रुपिनी ॥ नीलाकृतनिरुंदरु. महाकाया महा  
त्सवं ॥ नानाकुलसमाकिष्णु. नानावस्त्रधरागुहा ॥ त्रिनावन

महामता. अग्निरुप्यसमपुत्रं ॥ अर्वागामसुस्र (प्रार्ण. दावाः  
प्रिसमगजसं ॥ विष्णुनमं उरुदाह. उमत्रुगकुलीधरा ॥ पात्रिजा  
नकाम्मकृद्वर. स्वकृचर्मधरागुहा ॥ पात्राकुशधरादेवी. वरु  
धुविगदाधरा ॥ कपालंकरिक्कंचकं. गजचर्मवगुगिना ॥ दक्ष  
कलावददने. वाद्यचर्मकिहिवृणा ॥ सातंकाभनसर्वांगीन



नास्ति पृथक् (मज्झिमे) ॥ श्रीर्षमाता धन्वा देवः कपातमानिकार्त्त  
म ॥ चूठा मनी महान्तः कपातवन्द्य सपत्नी ॥ महाधुमा स  
मानिया ॥ नृयगाते सदा प्रिया ॥ सखीति नृषण्डं चः अटा वि  
द्युत्समं निर्या ॥ चणुपी ० स्मिता निर्याः अस्मकं निवासीनीः  
॥ अस्मकं स्मिता देवीः अस्माद् योगिनी प्रिया ॥ एडपीः

० स्मिता निर्याः एडकाती समाह ॥ एडका नभः कर्त्तव्यः वर  
एडनभा सुत ॥ ॥ अस्मिता नैव नृषण्डं च (मुक्ता धरणीव  
॥ ३ ॥ अस्मिता नृषण्डं च कपाती लोपन सुधा ॥ सहा नृषण्डं च १  
स्माव. एव वाहनमा सुत ॥ स्वस्मान् स्वाधिकाता स्वस्व  
रूपाः सर्वीयका ॥ स्वस्वकार्येषु वर्त्तन्ते दिव्या ननी कृत



मिसा ॥ दशदि कृष्णपाताश्वः कृष्णस्ववचमुदस ॥ पंचाशत्  
कृष्णपातैवः कृष्णपातैव नमो भूतनाथ नथ महानाथ कृदि  
नाथ महात्मनः श्रीनाथिद्विनाथ च ॥ श्रीनाथ नमो भूतनाथ ॥  
कृष्णनाथ च पी ० श्रीः श्रीपनाथं महात्मन ॥ प्रकृताथ च रूपाथ  
ः वदकनाथं नमो भूतनाथ ॥ प्रिनाथानेव नाथ चः श्रीदसनाथः

भूतनाथ ॥ सफविमरुद्विपंचाशोः श्रीनाथिद्विनाथ नमो भूतनाथ ॥ स  
र्वनाथ सिद्धनाथ ॥ संतानकृत रुद्रथ ॥ श्रीसंगेश्वरुथवी  
नमो सर्वचनमो भूतनाथ ॥ ॥ प्रकृताथ च रूपाथ ॥ प्रिनाथानेव नाथ चः  
प ० व्रत ॥ सनमावकथि पुरमः प्राप्ता कि ० उरुम किर्मः नयय  
रूपावचिना निनासय विद्युदवता ॥ नासय रूपावचिना



नासयत्तु ४४ एगिनी ॥ नासयत्तु च दानिर्दः नासयत्तु विपु  
मर्दनं ॥ नासयत्तु विपु नानि. नासयत्तु नाउ ऊधर्कः नास  
यत्तु विपु धार्य. नासयत्तु हि वा नर्क ॥ नसयत्तु ना किद धा नी  
नासयत्तु सर्वपानर्क ॥ नासयत्तु ना ग्धम ल्धम धने धान्य वि  
वदनं ॥ धर्मा धर्मा काम भा क्रमिः य ४४ सो एग म्धमूर्धमं ॥ म

द्विसिद्धि शीर्य नश्रीः वि शा ह्वानं सुना निर्नः वृद्धि यत्तु म्नि  
पुववर्द्धन वदिन दिन ॥ म्धकात मने न र्धः उत्पार्ध नासय  
सादाः सर्वज्ञा का ४४ पुर्धमं मिः दीर्घ माय ग्धत यत्त ॥ ॥  
नृमि शा पी ० निर्धु य दद्या मरुपी था व ता न शा पु म्धमार्धः से ४४ १५  
र शा एव नि द विन म् ॥ ॥ न ता नान मान वन्धु न्न द्या ताः न पू शा नः से ति धीः



प्रणीनर शानर को नयानर कि मभिवः गति हं गति हं  
 त्व मकारवानी ॥ नाना ज्ञाना मि न दान व य मान न ज्ञाना  
 मि मीष्ट न व ला पु उ अ ॥ न ज्ञाना मि पु ज्ञान व न्या स यो गी गति  
 ॥ शारवा वा व पा व महा इ हू र ना प वा क ४ प्र कामी पु श्रीः  
 रि पु मरु ॥ कू मा या कू त को प्र व भ स्म दा हं ए वानी गति  
 ४२

॥ न ज्ञाना मि पु ल्यं न ज्ञाना मि ती र्थः न ज्ञाना मि ए क्त  
 तय न्वा कि भ रत ॥ न ज्ञाना मि ए कि वु त म्वा पि मा त ४ गति  
 ॥ वा पु उ अं व ल र्ग र्ग म ह र्ग ग ल र्ग दि न र्ग नि स र्ग  
 वु त न्वा कि भ रत ॥ न ज्ञाना मि का र्थी स दा हं ए वानी गति  
 ॥ का कान्ना कू र्ग गी कू वू छी कू दा स ४ स दा वा व ही न क



दादातलीनः॥ कृष्टिक्वाकसदाहिरवानी. गमि॥ धाम वा  
द विषाद प्रमाद प्रवासः उचतवानत पर्वणसप्रमथ॥ अत्र  
स्थगनेच सदाहिरवानी. गमि॥ ॥ अत्र (था द विडा अनात्ता  
गयुक्ता. महाक्रीनदीन सगया अवेक॥ विपत्तिप्रविष्ट  
सदाहिरवानी. गमिह्वगमिह्व सदाहिरवानी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीसकवाकाथ विवचिहिरवान्याष्टकहर्जगपीस्फाण्ड  
समाप॥ ॥ अंसा २०५ ॥ बुद्धविष्णु दायनमानमः॥  
वृहत्तीवाहनेकस्यष्टिकवायश्च सुषर्नः सातपावामः  
सागवसादवसर्नमम॥ ॥ ॐ ॥ श्रीबुद्धविष्णु वृद्धः  
स्फाण्डसमाप॥ ॥ श्रीगुह्वनमः सदाजिवायनमाचम



[illegible]

ध्वज ॥ शांतिवैश्वानर उवाच ॥ पतिव्रताष्टयस्यः सुखवाच  
 दीप्तदानव ॥ अग्निं धूपं गनीह कृत्वाः ॥ दद्यात् कर्त्तुं नील  
 ॥ १ ॥ धावावती गच्छतीति नीलाः गच्छयस्य सदा ईश्वर  
 ॥ २ ॥ यथा विष्णुः कर्त्तुं गच्छतीति नीलाः ॥ ३ ॥ देवितां नीलपत्राः ॥ ४ ॥  
 यं गच्छत्यपनी ॥ हितं विष्णुं देवदत्तं ॥ ५ ॥ गीतवाचा ॥